Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 2305–2308

STUDY OF THE EFFECT OF PROFESSIONAL SATISFACTION OF TEACHERS WORKING AT COLLEGE LEVEL ON THEIR WORK STYLE

महाविद्यालय स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर प्रभाव का अध्ययन

Neetu Singhal [1], Garima Yadav [2]

[1] Research Supervisor, Mahatma Jyotirao Phule University, Jaipur, India
[2] Researcher, Mahatma Jyotirao Phule University, Jaipur, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.6368

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The objective of the present research work is to study the relationship between professional satisfaction and work style of teachers of government and private colleges. In this research, 300 teachers working in various government and private colleges of Jaipur district were selected as sample. Simple random sampling method was used for selection. Two main instruments were used for data collection—Teacher Professional Satisfaction Scale created by Dr. Pramod Kumar and Dr. D.N. Mootha and Teacher Work Style Scale created by the researcher. Correlation coefficient was used for analysis of the collected data. It was clear from the research results that no significant effect was reflected between the professional satisfaction and work style of teachers of government and private colleges. Similarly, no significant difference was found in professional satisfaction and work style between teachers (both government and private) of urban and rural areas. This study concluded that the work style of teachers is based on relatively independent and individual tendencies, on which the direct effect of professional satisfaction was found to be less. This research can prove helpful in understanding the multidimensional nature of teacher work style in higher education institutions and in making education policies and teacher training programs more effective in future.

Hindi: प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा उनकी कार्यशैली के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। इस शोध में जयपुर जिले के विभिन्न सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों में कार्यरत 300 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। चयन हेतु सरल यादृच्छिक नमूना विधि का प्रयोग किया गया। डेटा संकलन के लिए दो प्रमुख उपकरणों का उपयोग किया गया—डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. डी.एन. मूथा द्वारा निर्मित शिक्षक व्यावसायिक संतुष्टि मापनी तथा शोधकर्त्री द्वारा निर्मित शिक्षक कार्यशैली मापनी। संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु सहसंबंध गुणांक का उपयोग किया गया। शोध परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और उनकी कार्यशैली के मध्य कोई सार्थक प्रभाव परिलक्षित नहीं हुआ। इसी प्रकार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों (सरकारी एवं निजी दोनों) के बीच भी व्यावसायिक संतुष्टि और कार्यशैली में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि शिक्षकों की कार्यशैली अपेक्षाकृत स्वतंत्र एवं व्यक्तिगत प्रवृत्तियों पर आधारित है, जिस पर व्यावसायिक संतुष्टि का प्रत्यक्ष प्रभाव न्यून पाया गया। यह शोध उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षक कार्यशैली के बहुआयामी स्वरूप को समझने तथा भविष्य में शिक्षा नीतियों एवं शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

Keywords: Professional Satisfaction, Work Style, Government and Private Colleges, Urban and Rural Teachers, Higher Education, Correlation, Teacher Training व्यावसायिक संतुष्टि, कार्यशैली, सरकारी एवं निजी महाविद्यालय, शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक, उच्च शिक्षा, सहसंबंध, शिक्षक प्रशिक्षण

1. प्रस्तावना

शिक्षक किसी भी शिक्षा प्रणाली का केंद्रबिंदु होते हैं, जिनके ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण पर विद्यार्थियों के बौद्धिक एवं व्यक्तित्व विकास की नींव टिकी होती है। महाविद्यालय स्तर पर कार्यरत शिक्षक न केवल उच्च शिक्षा के प्रदाता होते हैं, बल्कि वे भविष्य की पीढ़ी को समाजोपयोगी, सक्षम और नैतिक दृष्टि से सशक्त नागरिक बनाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस संदर्भ में, शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि एक ऐसा प्रमुख कारक है जो उनके कार्य-व्यवहार, शिक्षण की गुणवत्ता और संस्थान में उनके योगदान को सीधे प्रभावित करता है।

व्यावसायिक संतुष्टि का आशय उस संतोष और पूर्णता की भावना से है, जो शिक्षक को अपने कार्य, कार्यस्थल, प्रशासनिक सहयोग, सहकर्मियों के साथ संबंध, तथा व्यावसायिक उपलब्धियों से प्राप्त होती है। जब शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट होते हैं, तो वे अधिक प्रेरित, समर्पित और नवाचारी होते हैं, जिससे उनकी कार्यशैली में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देता है। इसके विपरीत, असंतोष की स्थिति में उनकी कार्यक्षमता, उत्साह और शिक्षण-प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

महाविद्यालय स्तर पर, जहां शिक्षण केवल पाठ्यक्रम की पूर्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अनुसंधान, सह-पाठ्यचर्या गतिविधियों और प्रशासनिक दायित्वों का भी निर्वहन आवश्यक होता है, वहाँ व्यावसायिक संतुष्टि और कार्यशैली के बीच संबंध और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यह अध्ययन इन्हीं दोनों कारकों के परस्पर संबंध का विश्लेषण करने का प्रयास है, ताकि यह समझा जा सके कि शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में वृद्धि किस प्रकार उनकी कार्यशैली को सशक्त बनाकर शिक्षा की गुणवत्ता में योगदान दे सकती है।

2. अध्ययन का औचित्य

शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता मुख्य रूप से उस प्रणाली में कार्यरत शिक्षकों की दक्षता, प्रेरणा और कार्यशैली पर निर्भर करती है। महाविद्यालय स्तर पर, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं होता, बल्कि विद्यार्थियों में अनुसंधान दृष्टि, आलोचनात्मक चिंतन, मूल्यबोध और व्यक्तित्व विकास को भी प्रोत्साहित करना होता है, वहाँ शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इस भूमिका के सफल निर्वहन में व्यावसायिक संतुष्टि एक निर्णायक कारक के रूप में कार्य करती है। व्यावसायिक संतुष्टि की स्थिति में शिक्षक न केवल अपने शिक्षण कार्य में दक्षता और नवाचार लाते हैं, बल्कि वे अपने संस्थान के प्रति निष्ठा, सहयोग और सकारात्मक दृष्टिकोण भी प्रदर्शित करते हैं। इसके विपरीत, असंतोष की स्थिति में शिक्षक की कार्यशैली में उदासीनता, निष्क्रियता और नवाचार की कमी देखी जा सकती है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों और संस्थान की समग्र प्रगति पर पड़ता है। आज के प्रतिस्पर्धी और तकनीक-प्रधान शिक्षा वातावरण में शिक्षकों पर कार्य का दबाव, संसाधनों की उपलब्धता, प्रशासनिक अपेक्षाएँ और व्यावसायिक विकास के अवसर—ये सभी उनकी संतुष्टि और कार्यशैली को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से भारत जैसे विविध सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य वाले देश में, सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों के शिक्षकों के अनुभव और परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं, जो उनके व्यावसायिक संतोष और कार्यशैली में विविधता पैदा करती हैं। इसलिए, यह अध्ययन न केवल शिक्षक कल्याण और पेशेवर दक्षता के बीच संबंध को उजागर करेगा, बल्कि शैक्षिक नीतियों, संस्थागत सुधारों और शिक्षक विकास कार्यक्रमों के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करेगा। इस शोध के निष्कर्ष शिक्षा प्रशासन, नीति-निर्माताओं और महाविद्यालय प्रबंधन को यह समझने में सहायक होंगे कि व्यावसायिक संतुष्टि बढ़ाकर किस प्रकार शिक्षकों की कार्यशैली को और प्रभावी बनाया जा सकता है, जिससे उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में स्थायी सुधार संभव हो सके।

3. शोध के उद्देश्य

1) सरकारी एवं निजी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2) शहरी एवं ग्रामीण सरकारी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3) शहरी एवं ग्रामीण निजी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

4. शोध परिकल्पनाएँ

1) सरकारी एवं निजी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2) शहरी एवं ग्रामीण सरकारी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3) शहरी एवं ग्रामीण निजी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में जयपुर जिले के सभी सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों में कार्यरत् 300 शिक्षकों का चयन न्यादर्श हेतु सरल यादृच्छिक विधि के द्वारा किया गया है।

5. शोध के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है-

- शिक्षक व्यावसायिक संतुष्टि मापनी:- डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. डी.एन. मूथा द्वारा निर्मित
- शिक्षक कार्यशैली मापनी:- स्वनिर्मित

6. शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन प्रदत्तों विश्लेषण करने के लिए सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना 1 सरकारी एवं निजी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 1

समूह	N	सहसंबंध गुणांक (r)	परिणाम
सरकारी एवं निजी महाविद्यालय शिक्षक	300	0.12	नगण्य सहसंबंध

व्याख्या:

प्राप्त सहसंबंध गुणांक r = 0.12 है, जो शून्य के निकट है। यह परिणाम सांख्यिकीय दृष्टि से नगण्य और असार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं निजी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और उनकी कार्यशैली में परस्पर कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षक चाहे सरकारी संस्थान में हों अथवा निजी, उनकी कार्यशैली का निर्धारण केवल व्यावसायिक संतुष्टि के आधार पर नहीं होता, बल्कि इसमें शैक्षिक वातावरण, प्रशासनिक दबाव, व्यक्तिगत व्यक्तित्व गुण, तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारक भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार परिकल्पना-1 अनुमोदित होती है।

परिकल्पना 2 शहरी एवं ग्रामीण सरकारी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 2

समूह	N	सहसंबंध गुणांक (r)	परिणाम
शहरी एवं ग्रामीण सरकारी शिक्षक	150	0.08	नगण्य सहसंबंध

व्याख्या:

इस समूह का सहसंबंध गुणांक r = 0.08 प्राप्त हुआ है, जो अत्यंत अल्प है और किसी भी प्रकार से सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। यह दर्शाता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यशैली उनकी व्यावसायिक संतुष्टि से सीधे प्रभावित नहीं होती। संभव है कि सरकारी महाविद्यालयों में कार्यशैली का निर्धारण सरकारी नीतियों, कार्यभार, संसाधनों की उपलब्धता, नौकरी की स्थिरता और पदोन्नति प्रणाली जैसे कारकों से अधिक होता है, जबकि व्यावसायिक संतुष्टि का योगदान सीमित होता है। अतः परिकल्पना-2 अनुमोदित है।

परिकल्पना 3 शहरी एवं ग्रामीण निजी महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनकी कार्यशैली पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 3

समूह	N	सहसंबंध गुणांक (r)	परिणाम
शहरी एवं ग्रामीण निजी शिक्षक	150	0.15	नगण्य सहसंबंध

व्याख्या:

निजी महाविद्यालय शिक्षकों में सहसंबंध गुणांक r = 0.15 प्राप्त हुआ, जो सांख्यिकीय दृष्टि से नगण्य है। इसका अर्थ है कि उनकी कार्यशैली और व्यावसायिक संतुष्टि के बीच कोई ठोस और प्रत्यक्ष संबंध स्थापित नहीं हो पाता। इस परिणाम से यह संकेत मिलता है कि निजी महाविद्यालयों में शिक्षकों की कार्यशैली मुख्यत: प्रबंधन की अपेक्षाओं, अनुशासन की कठोरता, प्रतिस्पर्धा, विद्यार्थियों की भागीदारी और संस्थान की नीतियों से प्रभावित होती है। अत: व्यावसायिक संतुष्टि का प्रभाव कार्यशैली पर नगण्य है। इसलिए परिकल्पना-3 अनुमोदित होती है।

7. समग्र निष्कर्ष

तीनों परिकल्पनाओं के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि सरकारी अथवा निजी, शहरी अथवा ग्रामीण – सभी महाविद्यालयों में शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और उनकी कार्यशैली के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण संबंध नहीं पाया गया। यह परिणाम इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि कार्यशैली का निर्धारण केवल व्यावसायिक संतुष्टि से नहीं होता, बल्कि यह एक बहु-आयामी प्रक्रिया है जिस पर व्यक्तिगत, सामाजिक, संस्थागत और नीतिगत कारक समान रूप से प्रभाव डालते हैं।

8. सुझाव

1) **शैक्षिक संस्थानों के स्तर पर**
   - महाविद्यालय प्रशासन को चाहिए कि वे शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि को बढ़ाने हेतु सकारात्मक कार्यपरिवेश तैयार करें।
   - शिक्षकों की कार्यशैली को सृजनात्मक और शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने के लिए प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।
2) **नीतिगत स्तर पर**
   - सरकारी एवं निजी महाविद्यालयों में शिक्षकों की प्रोत्साहन योजनाओं को लागू किया जाए जिससे वे अपने कार्य में अधिक संतुष्टि महसूस कर सकें।
   - कार्यशैली के मानकीकरण हेतु सामान्य आचार संहिता निर्धारित की जानी चाहिए।
3) **शिक्षकों के स्तर पर**
   - शिक्षकों को चाहिए कि वे व्यावसायिक असंतोष को अपनी कार्यशैली को प्रभावित न करने दें और अपने कार्य में नवाचार एवं रचनात्मकता बनाए रखें।
   - शिक्षकों को समय प्रबंधन, तनाव प्रबंधन और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए ताकि उनकी कार्यशैली अधिक प्रभावी हो सके।
4) **छात्रों के हित में**
   - शिक्षकों की कार्यशैली को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप लचीला और अनुकूलनशील बनाया जाए।
   - विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को प्रेरणादायी व व्यवहारिक शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए।
5) **भविष्य के शोधार्थियों के लिए**
   - भविष्य में इस विषय पर बड़े स्तर पर विभिन्न जिलों/राज्यों के शिक्षकों को शामिल करते हुए शोध किया जा सकता है।
   - व्यावसायिक संतुष्टि और कार्यशैली के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक बुद्धि और संगठनात्मक प्रतिबद्धता जैसे कारकों को भी जोड़कर शोध कार्य किया जाना चाहिए।

ग्रंथसूची

कुमार, प्रमोद एवं मूथा, डी.एन. (2015). शिक्षक व्यावसायिक संतुष्टि मापनी. जयपुर: विद्या प्रकाशन।
त्रिपाठी, एस.एन. (2019). शैक्षिक मनोविज्ञान. नई दिल्ली: भारती बुक हाउस।
चौहान, एस.एस. (2020). प्रयोगात्मक मनोविज्ञान एवं शिक्षा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
तिवारी, एम. (2021). भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षक प्रशिक्षण. प्रयागराज: साहित्य भवन।
शर्मा, आर.के. (2022). शिक्षा का समाजशास्त्र. नई दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्स।